अनुसन्धान प्रवाह Anusandhan Pravah
(An Open Access, Peer Reviewed, Multidiciplinary, Bilingual, E-Journal)
Vol.1, Issue 1, Year 2024, pp. 73-78
URL : https://journal.sskhannagirlsdc.ac.in/

आंवा (टोंक) का अल्पज्ञात जैन शिलालेख

श्रीमती पुष्पा शर्मा
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लल्लाई केकड़ी (अजमेर)

सारांश:

राजस्थान प्राचीन काल से ही विभिन्न सभ्यता एवं संस्कृति की उद्भव स्थली रहा है। आवां जयपुर-जबलपुर राष्ट्रीय राजमार्ग १२ से १२ किलोमीटर दक्षिण में स्थित है,राष्ट्रीय राजमार्ग टोंक से ३७ किलोमीटर की दूरी पर सरोली मोड़ से पृथक होते मार्ग पर अवस्थित है। आवां टोंक का छोटा कस्बा है। यह जयपुर से १५० किलोमीटर दूर,टोंक से ४८ किलोमीटर देवली से ३८ किलोमीटर एवं कोटा से १२४ किलोमीटर दूरी पर अवस्थित है। आवां में दो जैन मन्दिर स्थित है एक भगवान शांतिनाथ का १२ वीं शताब्दी का प्राचीन दिगम्बर जैन मन्दिर जहाँ मूल नायक भगवान शान्तिनाथ की ४८ x४२ इंच ऊँची पद्मासन ध्यान मुद्रा में चिकने श्वेत पाषाण से निर्मित प्रतिमा प्रतिष्ठित है। मन्दिर की भित्ति पर लगे शिलालेख में संस्कृत-

नागरी भाषा में निबद्ध उक्त पुरा लेख में ३४ पद्य है। लेख में प्रतिष्ठाचार्य धर्मचन्द भट्टारक प्रतिष्ठाकारक छाबड़ा गोत्रीय वेणीराम कालूलाल के पुत्र रणमल्ल एवं तेजमल तथा उनके पुत्र पौत्रादि नामोल्लेख एवं आवां नगर के शासक सूर्यसेन का उल्लेख प्राप्य है।

Article Publication:

Published online on: 30/12/2024

Corresponding Author:
श्रीमती पुष्पा शर्मा
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लल्लाई केकड़ी (अजमेर)
Email: Sharmapushpa975@gmail.com

©Sadanlal Sanwaldas Khanna Mahila Mahavidyalay

Scan For Paper

प्रमुख शब्दः *आवां , शांतिनाथ , भट्टारक , श्री कुन्दकुंदाचार्य , निषेधिकाएं*

आवां के जैन मंदिर और लेख

राजस्थान प्राचीन काल से ही विभिन्न सभ्यता एवं संस्कृति की उद्भव स्थली रहा है । आवां जयपुर-जबलपुर राष्ट्रीय राजमार्ग १२ से १२ किलोमीटर दक्षिण में स्थित है,राष्ट्रीय राजमार्ग टोंक से ३७ किलोमीटर की दूरी पर सरोली मोड़ से पृथक होते मार्ग पर अवस्थित है। आवां टोंक का छोटा कस्बा है। यह जयपुर से १५० किलोमीटर दूर,टोंक से ४८ किलोमीटर देवली से ३८ किलोमीटर एवं कोटा से १२४ किलोमीटर दूरी पर अवस्थित है। आवां में दो जैन मन्दिर स्थित है एक भगवान शांतिनाथ का १२ वीं शताब्दी का प्राचीन दिगम्बर जैन मन्दिर जहाँ मूल नायक भगवान शान्तिनाथ की ४८ x४२ इंच ऊँची पद्मासन ध्यान मुद्रा में चिकने श्वेत पाषाण से निर्मित प्रतिमा प्रतिष्ठित है । ग्राम आवां के तीन तरफ पर्वत श्रृंखला एवं एक किलोमीटर चौड़ा जंगल है, यह एक टाइल पर अवस्थित है चारों ओर तालाब और बांध है। कस्बे की प्राकृतिक छटा मनोहर है। जिन शान्तिनाथ मन्दिर का प्रतिष्ठा काल संवत १२२३ (११६६)ई.संवत १२४८ (११९१) अंकित है। संवत १५९३ में आवां नगर में एक विशाल प्रतिष्ठा समारोह हुआ जिसका उल्लेख मन्दिर की भित्ति पर लगे शिलालेख से ज्ञात होता है। संस्कृत-नागरी भाषा में निबद्ध उक्त पुरा लेख में ३४ पद्य है। लेख में प्रतिष्ठाचार्य धर्मचन्द भट्टारक प्रतिष्ठाकारक छाबड़ा गोत्रीय वेणीराम कालूलाल के पुत्र रणमल्ल एवं तेजमल तथा उनके पुत्र पौत्रादि नामोल्लेख एवं आवां नगर के शासक सूर्यसेन का उल्लेख प्राप्य है।

मन्दिर में स्थित शिलालेख -

श्री शांतीशं जिन नत्वा,भवांबोनिधि तारकं ॥

वक्षेहं जैन संघस्य,प्रशस्ति सोक्षदां सतां ॥ १॥

श्रीमद्विक्रम भूपस्य,विख्याते च मनोहरे ॥

वर्षेग्निरंध्रवाणैक संयुते शुभकारके ॥ १॥

॥ सं. १५९३ वर्षे ॥

श्रीमत: शकराजस्य,शाके वर्तति सुन्दरे ।

दिन्वारणेषु वेदेक, संयुक्ते मंगलान्विते ॥ २ ॥

शाके १४५८

षष्ठाब्दानां च मध्येषु शुभ प्रपादिकं।

वर्तति शुभ कृन्नाम्नि ,संवत्सरे धवर्जिते ॥ ३ ॥

शुक्ल ज्येष्ठ तृतीयायां ,चन्द्रवासर राजि च ।

पुनर्वसु सुनक्षत्रे,वन्हि नाम नियोगकै ॥ ४ ॥

श्री मूलसंघे वरं नंदि संघे .....विशारदा ।

रम्ये बलात्कार गणे गुणाढयो .....॥ ५॥

तत्र कुंदकुंदाह, आचार्य संयतोणी ।

भट्टारक: वंघोवहावरा: ॥ ६॥

नंद्याम्नाय भवेतसूरी: पद्यनंदि विशारदा:।

यद्वा क्करैवरै जैनमतोकाश प्रकाशित: ॥ ७ ॥

तत्पत्त्जां शुभानीयो भट्टारक पदेस्थित:।

प्रभवशुभचन्द्राख्या: श्रीमान् श्रियां प्रभुं ॥ ८ ॥

तत्पट्टस्य परोधीमान जिनचंद्र सुतच्छिता ।

अभूतोस्मि सुविख्यातो, ध्यानाविदग्धकर्मक: ॥ ९ ॥

तत्पट्टेसु श्रुताधारी, प्रभाचंद्र श्रियांनिधि: ।

दीक्षितो यो लसंकीर्ति, प्रचंड: पंडिताग्रणी: ॥ १० ॥

तच्छिष्यो धर्म चंद्राह: प्रिय: प्राज्ञो गुणाकर: ।

जिनबिंब प्रतिष्ठादि, धर्मकार्यसु बुद्धिमान ॥ ११॥

तदाम्नीय .....धर्मकारिण: ।

तेषां व्यावर्णनासारा, क्रियते सर्वायथाक्रमं ॥ १२ ॥

बम्हचालुक्य वंशेस्मिन सोलंकी गौत्र विस्फुरन् ।

यावर्तते प्रजानंदी सूर्यसेन प्रतापवान् ॥ १३ ॥

तस्य राजाधिराज, द्वे भार्या च विचक्षणे ।

वर्तते वतयोर्मध्ये,पूर्वा सीताख्यया नाम्ना स्मृता ॥ १४ ॥

द्वितीय वर्तिता ख्याता नाम्ना शोभागदेमता ।

तत्पुत्रो वरोजता कलागुण विशारदा ॥ १५ ॥

प्रथमो पृथ्वीराजो, द्वितीय पूर्णमल्ल:वाक् ।

शोभते येव राजानं, पुत्र पौत्रादि संयुता: ॥ १६ ॥

तद्राज्य खंडिता राजा,वर्तमाने मनोहरे ।

शुद्धेव शुभं प्राज्ये, नित्यं पुण्यं मंडितं ॥ १७ ॥

आवांख्ये नगरे सारे,शान्तिनाथ जिनालये ।

जैनधर्मवरे नित्यं विद्वज्जन समर्चिते ॥ १८॥

अथवा ॥ खंडेलवाल वंशेस्मिन्साबडा गौत्र संयुक्ते ।

कालूनाम: भवत्तत्र संघभार धुरंधर ॥ १९ ॥

तस्य भार्या भवेत् साधी, कमलश्री विचिक्षणा ।

तत्पुत्रो रणमल्लाख्य तेजो नाम द्वितीयक:॥ २० ॥

प्रथमाख्या भवेद् भार्या,रानादे नामा मता ।

तस्य पुत्राश्च चत्वारो धर्म कार्य परायणा: ॥ २१॥

क्षेमाख्यश्च स्मृत पूर्वो, राजमान्यो विचक्षण:।

वेणानाम द्वितीयेषु जिन पूजा पुरन्दर: ॥ २२ ॥

गजाख्यश्च तृतीयेषु तुर्ये डूंगो नामयुक् ।

वर्तु तारां चत्वार: पदार्थो इव सम्पदा ॥ २३ ॥

प्रथम: क्षेमराजस्य, द्वे भार्यषु सुलक्षणे:।

प्रथमा क्षेम श्री प्रोक्ता तथा शोभागदेमता ॥ २४ ॥

तस्य पुत्रास्त्रय: प्रोक्ता: पूर्व साधारणेमत:।

द्वितीय: श्री करणाख्य: स्तृतिया धर्मदासवाक् ॥ २५ ॥

त्रिमि: पुत्रैस: संयुक्त घिवगरि परोरिव ।

शोभते क्षेमराजस्य,विष्कंभ चतुराशय: ॥२६ ॥

साह श्री रणमल्लाख्य:,पुत्रो वेणाख्य: निर्मल:।

विमलादे स्त्रिया साक,राजंते सो विचक्षण: ॥ २७ ॥

गजाह्वश्च तृतीयेषु गोरादे वनितायति: ।

चतुर्थो साह डुंगाख्यो दाड़िमदे पतिश्च स ॥ २८ ॥

एतेश्चपुत्र पौत्राधै मंडिता:शोभते वर: ।

साह श्री रणमल्लाख्य वंशो भू व सुमानित: ॥२९ ॥

कालू द्वितीय पुत्रस्य तेजो नाम शुभंमति: ।

तेनश्री वनिता तस्य दान शील सुनिर्मला ॥ ३० ॥

जगदादे पति रूक्षाख्य: पुत्रो जातो रत्यो रपि ।

तयो पुत्रश्च श्रीवतं शोभतेत्र विचक्षण: ॥ ३१ ॥

एते सर्वेर्थशष्कारि चैत्यालय उदारकं ।

कारयित्वा शांतीशो नि:श्रेयसे सु शर्मदा ॥ ३२ ॥

प्रतिष्ठापति मिदं सारं राज्ञां साधर्मिणा मपि ।

चतुर्विधस्य संघस्य शांति करोतु सर्वदा ॥ ३३ ॥

॥ युग्मं ॥ शांति करोतु जगदीश्वर आशीर्वाद पुष्टिश्रिय शिवयतीव सुखंचिरायु:।

जन्मोत्सव: सुखरैकृत एव मैरो शांतिश्च यस्य भुवनेशत्रव: सुधीश: ॥ ३४ ॥

॥आशीर्वाद ॥ शुभं भवतु ॥ कल्याण मस्तु ॥

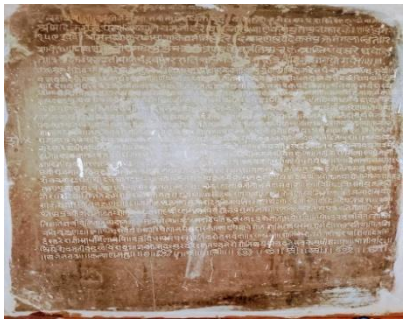

निष्कर्ष

आवां के पहाड़ी क्षेत्र नसियां में प्रतिष्ठापित भट्टारकों की तीन निषेधिकाएं है। भट्टारक जिनचन्द्र की निषेधिका ९ फुट १४-१५ इंच आयाम के लगभग,भट्टारक शुभचन्द्र की ८-९ फुट एवं भट्टारक प्रभाचन्द्र की ८ फुट के लगभग है। इन निषेधिकाओं की प्रतिष्ठा का संवत १५९३ में हुई। निषेधिकाओं पर लेख संवत १५९३ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ३ सोमे श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुंदाचार्य श्री पदम्नन्दिदेवा .....। अंकित है। निषेधिकाओं के अभिलेख काफी अस्पष्ट एवं धूमिल हो चुके है। पठन में आये लेख से जैनाचार्यो की परम्परा का वर्णन ज्ञात होता है। मुख्यता जैन लेखों में राजवंश वर्णन के पश्चात जैनाचार्यो की परम्परा का ही उल्लेख प्राप्त होता रहा है। जैन मूर्तियों की पीठिका पर लेख उन मूर्तियों की स्थापना निर्माण जीर्णोद्धार से सम्बन्धित पठन में आते है। शिलालेख एवं प्रशस्तियाँ एक मूक साधन है फिर भी इतिहास के निर्माण के मूलाधार है।

सन्दर्भ :

- डॉ कस्तूरचंद कासलीवाल श्री शान्तिनाथ स्मारिका-
- इतिहासकार श्री ललित शर्मा से गहन विमर्श (झालावाड)
- लेखिका द्वारा सामुख्य अध्ययन
- स्थानीय जैन समाज से वार्ता